DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-7,
TREATMENT OF UNIPOLAR DEPRESSION
LECTURE-83

एकध्रुवीय विषाद का उपचार

(TREATMENT OF UNIPOLAR DEPRESSION)

एकध्रुवीय विषाद से ग्रसित व्यक्ति के उपचार के लिए कई विधियों का प्रतिपादन किया गया है जिसमे पहला निम्नलिखित है –

मनोगतिकी चिकित्सा (PSYCHODYNAMIC THERAPY)-

मनोगतिकी चिकित्सा में चिकित्सक यह पूर्व कल्पना करता है की एकध्रुवीय विषाद का कारण वास्तविक एवं काल्पनिक

क्षतियों के अचेतन के दुःख जो दुसरो पर अत्यधिक निर्भरता दिखलाने से मिश्रित होता है ,बतलाया गया है |चिकित्सक यहाँ विषादी व्यक्तियों के इन प्रक्रियाओं के चेतन में लाने की कोशिश करते है ताकि वे अपने दुःख-दर्द के वास्तविक स्रोत को समझा सके और उससे अपने को दूर रखना सीख सके |ऐसे चिकित्सक इन विषादी व्यक्तियों के साथ कुछ वैसे मनोगतिकी प्रविधियों का भी उपयोग करते है जिससे वे अन्य विकृति के रोगियों के उपचार में उपयोग करते है |जैसे,ऐसे चिकित्सक क्लायंट को चिकित्सा के दौरान मुक्त रूप से अपने मन में आने वाले विचारों की अभिव्यक्ति करने की सलाह देते है ,क्लायंट द्वारा चिकित्सा के दौरान दिखलाए गए अंतरण ,प्रतिरोध , सहचर्यो एवं स्वप्नों की व्याख्या करते है तथा अपने क्लायंट को गत अनुभूतियों एवं भावों का पूर्ण मूल्यांकन करने में मदद करते है |ऐसा देखा गया है की स्वतंत्र सहचर्य ने एक रोगी को क्षति के आरंभिक अनुभूतियों जिससे उसमे विषाद उत्पन्न हो गया था ,का प्रत्याह्वान (RECALL) करने में मदद किया |मनोगतिकी चिकित्सक की आम उम्मीद यह रहती है की विषादी क्लायंट के उपचार के दौरान चिकित्सक तथा अन्य लोगो पर अपने निर्भरता कम

करता जाएगा और अपनी जिन्दगी में संबंधित परिवर्तन करता जाएगा यद्दपि मनोगतिकी चिकित्सा का उपयोग सफलता पूर्वक विषादी रोगियों के उपचार में किया गया है,फिर भी शापिरों एवं उनके सहयोगियों (1994) का यह दावा है की एकध्रुवीय विषाद के उपचार में कभी-कभी ही इस प्रविधि द्वारा सफलता मिलता है |इसके इस सीमित प्रभावशीलता के दो मुख्य कारण बतलाये गए है –

(i) विषादी क्लायंट इतना अधिक निष्क्रिय होते है तथा थकान महसूस करते है की वे चिकित्सा दौरान विचार-विमर्श में शायद ही कभी ठीक ढंग से हिस्सा बांट सकते है |इसका परिणाम यह होता है की वे उस सूक्ष्म स्तर के सूझ का भी उपयोग नही कर पाते है जिसकी जरुरत इस चिकित्सा में होती है |

(ii) अक्सर देखा गया है की विषादी रोगी मनोगतिकी चिकित्सा का त्याग सिर्फ इसलिये कर देते है क्योंकि इसका स्वरूप लम्बा होता है और रोगी को तात्कालिक लाभ की इसमें कोई उम्मीद नहीं रह जाती है |यही कारण है की स्वार्टवर्ग तथा स्टाइल्स (1991)ने अपनी समीक्षा के आधार पर यह बतलाया है की लघुकालीन

मनोगतिकी उपागम विषादी रोगियों के उपचार में तुलनात्मक रूप से अधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ है | यद्यपि शोधकर्त्ताओ का यह अनुमान रहा है की मनोगतिकी चिकित्सा विषादी रोगियों के उपचार में सीमित उपयोगिता दिखलाता है ,फिर भी इस प्रविधि का उपयोग इस विकृति के रोगियों के उपचार में काफी किया जाता है |

TO BE CONTINUED